ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 153-155**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

विकसित भारत 2047: भारत की आर्थिक रणनीति का विश्लेषण

डॉ0 कनुप्रिया
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लक्सर, हरिद्वार (उत्तराखंड) भारत

Received-21.10.2025, Revised-28.10.2025, Accepted-05.11.2025 **E-mail:kanupriya.virmani@gmail.com**

सारांशः प्रस्तुत शोध पत्र विकसित भारत 2047 की परिकल्पना के संदर्भ में भारत की आर्थिक रणनीति का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें आर्थिक विकास के प्रमुख आयामों जैसे अवसंरचना, निवेश, तकनीकी नवाचार, कृषि, विनिर्माण, ऊर्जा तथा मानव संसाधन विकास की भूमिका का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि केवल आर्थिक वृद्धि पर्याप्त नहीं है, बल्कि समावेशी और संतुलित विकास आवश्यक है, जो शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार सृजन पर आधारित हो।

शोध में यह भी रेखांकित किया गया है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी, उद्यमिता, कौशल विकास तथा हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्र भविष्य की आर्थिक प्रगति के प्रमुख चालक होंगे। साथ ही, प्रभावी शासन, वित्तीय समावेशन और संस्थागत सुधार विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होंगे। निष्कर्ष के रूप में समन्वित नीतियों, सतत विकास और सामाजिक समानता के माध्यम से भारत 2047 तक एक विकसित और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी राष्ट्र बन सकता है।

कुंजीभूत शब्द– विकसित भारत 2047, आर्थिक रणनीति, परिकल्पना, अवसंरचना, निवेश, तकनीकी नवाचार, विनिर्माण, ऊर्जा।

परिचय– विकसित भारत 2047 की परिकल्पना भारत की उस आकांक्षा को दर्शाती है जिसके अंतर्गत देश स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष तक एक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य रखता है। यद्यपि पिछले कुछ दशकों में देश ने उल्लेखनीय आर्थिक वृद्धि का अनुभव किया है, फिर भी किसी देश की आर्थिक प्रगति को केवल उसके सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में वृद्धि के आधार पर ही नहीं मापा जा सकता।

इसलिए प्रति व्यक्ति आय, मानव विकास और सामाजिक समानता जैसे क्षेत्रों में भारत को अभी भी विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केवल आर्थिक विस्तार ही नहीं बल्कि संरचनात्मक परिवर्तन और सामाजिक प्रगति भी आवश्यक है।

विकास का अर्थ संसाधनों और श्रम के उचित तथा पूर्ण उपयोग से है तथा निम्न उत्पादकता वाले क्षेत्रों से उच्च उत्पादकता वाली गतिविधियों की ओर परिवर्तन से है। ऐतिहासिक रूप से भारत के कार्यबल का एक बड़ा भाग कृषि में केंद्रित रहा है और अन्य क्षेत्रों में कम रहा है, जो समग्र आर्थिक उत्पादन में अपेक्षाकृत कम योगदान देते हैं। जैसे–जैसे अर्थव्यवस्थाएँ विकसित होती हैं, रोजगार का स्थानांतरण प्रायः कृषि से विनिर्माण और सेवा क्षेत्र की ओर होता है। यह संरचनात्मक परिवर्तन उत्पादकता, आय स्तर और समग्र आर्थिक स्थिरता को बढ़ाता है। इसके साथ–साथ विकास समावेशी भी होना चाहिए। ऐसी आर्थिक वृद्धि जो केवल सीमित वर्ग को लाभ पहुंचाए, वह सामाजिक असमानता और अस्थिरता को बढ़ा सकती है। इसलिए विकसित भारत 2047 की परिकल्पना समानतापूर्ण विकास पर बल देती है जो सभी नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार करे। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार सृजन तथा सामाजिक कल्याण में निवेश इस परिवर्तन के महत्वपूर्ण घटक हैं।

समकालीन वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रौद्योगिकी और नवाचार विकास के प्रमुख चालक बन गए हैं। डिजिटल अवसंरचना, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ज्ञान आधारित उद्योगों का विस्तार विश्वभर में आर्थिक प्रणालियों को पुनः आकार दे रहा है। भारत की विकास रणनीति भी अब यह स्वीकार कर रही है कि तकनीकी प्रगति और उद्यमशील नवाचार नए अवसरों के सृजन और उत्पादकता वृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अपनी तकनीकी क्षमताओं को सुदृढ़ करके और नवाचार आधारित उद्यमों को प्रोत्साहित करके भारत वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और समृद्ध अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अपनी यात्रा को तेज कर सकता है।

उद्देश्य– इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य विकसित भारत 2047 की परिकल्पना के संदर्भ में भारत के आर्थिक विकास के प्रमुख आयामों का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन उन महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक कारकों की पहचान करने का प्रयास करता है जो भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. विकसित भारत 2047 के संदर्भ में भारत की आर्थिक विकास रणनीति का विश्लेषण करना।
2. आर्थिक विकास में निवेश, अवसंरचना और तकनीकी नवाचार की भूमिका का अध्ययन करना।
3. रोजगार सृजन, कौशल विकास और मानव पूंजी के महत्व को समझना।

शोध पद्धति– यह अध्ययन मुख्य रूप से द्वितीयक आँकड़ों (Secondary Data) पर आधारित है। अध्ययन के लिए जानकारी विभिन्न सरकारी रिपोर्टों, नीति दस्तावेजों, शोध लेखों, पुस्तकों तथा भारतीय अर्थव्यवस्था और विकास नीतियों से संबंधित प्रकाशित स्रोतों से एकत्रित की गई है। इस शोध में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से विकसित भारत 2047 के आर्थिक ढाँचें और उससे जुड़े विभिन्न आयामों का अध्ययन किया गया है।

विकास के लिए व्यापक आर्थिक ढाँचाः एक स्थिर और सुव्यवस्थित व्यापक आर्थिक वातावरण किसी भी देश की सतत आर्थिक वृद्धि का आधार होता है। विकसित भारत 2047 के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए भारत को दीर्घकालिक विकास ढाँचें का अनुसरण करना होगा जिससे आर्थिक स्थिरता बनाए रखते हुए सतत विकास सुनिश्चित किया जा सके।

इस ढाँचें में राजकोषीय अनुशासन, मूल्य स्थिरता, वित्तीय स्थिरता तथा नीतियों का सतत क्रियान्वयन शामिल है। सार्वजनिक निवेश इस उद्देश्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेष रूप से अवसंरचना विकास आर्थिक वृद्धि को समर्थन देने के लिए अत्यंत आवश्यक है। स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक अवसंरचना पर बढ़ा हुआ व्यय नागरिकों के कल्याण को सीधे प्रभावित करता है तथा अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता को सुदृढ़ करता है।

कुशल परिवहन नेटवर्क, विश्वसनीय ऊर्जा प्रणालियाँ, आधुनिक संचार तकनीक तथा सुव्यवस्थित शहरी अवसंरचना वस्तुओं, सेवाओं और लोगों के आवागमन को सुगम बनाती हैं, जिससे उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि होती है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

डिजिटल अवसंरचना भी विकास का एक महत्वपूर्ण घटक बनकर उभरी है। इंटरनेट कनेक्टिविटी का विस्तार, डिजिटल शासन प्लेटफॉर्म और प्रौद्योगिकी आधारित सार्वजनिक सेवाओं ने प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाया है तथा सूचना तक पहुँच को बेहतर किया है। इन तकनीकी साधनों के माध्यम से सरकारें नीतियों को अधिक प्रभावी ढंग से लागू कर सकती हैं।

वृहद आर्थिक ढाँचे का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू विकास और समानता के बीच संतुलन बनाए रखना है। विकास ऐसा होना चाहिए जो नागरिकों को आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए सक्षम बनाए। जब व्यक्तियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार के अवसर और वित्तीय संसाधनों तक पहुँच मिलती है, तब वे आर्थिक विकास में सक्रिय योगदानकर्ता बनते हैं।

कृषि विकास– देश के आर्थिक ढांचे के आधारभूत स्तंभों के रूप में हमारे देश की कृषि व्यवस्था एवं पशुपालन (डेरी उद्योग) महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। देश में आर्थिक स्थिरता तथा समृद्धि के लिए इन दोनों प्राथमिक सेक्टर के बुनियादी ढांचे में व्यवस्थागत सुधार, कृषि, पशुपालकों तथा मछुआरों की मूलभूत समस्याओं के समाधान के लिए पारदर्शी फोरम की व्यवस्था विकसित करनी होगी इसके साथ ही ग्रामीण जनसंख्या की आय के स्रोत में विविधीकरण के लिए जैविक कृषि, मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन तथा मत्स्य पालन के क्षेत्र में स्तरीय सुविधाएं विकसित करने होंगी।

कृषि क्षेत्र में दलहन, तिलहन और बागाती खेती के विकास की व्यापक संभावनाएं हैं। इनके अनुकूल क्षेत्रो की पहचान कर कृषि उत्पादन को बढ़ाने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए सतत कृषि प्रणाली के विस्तार की जरूत है।इसके अलावा कृषि में डिजिटल तकनीक एआई और ड्रोन तकनीक का प्रयोग खेती के आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक है।

फसलों के वर्धन समय और मौसम परिवर्तन की संभावनाओं को देखते हुए अनुकूल कृषि मॉडल विकसित करके किसानों को उनकी जानकारी देना, जैविक प्रौद्योगिकी का सावधानीपूर्वक प्रयोग, गहन कृषि अनुसंधान, कृषि विज्ञान केन्द्रो का आधुनिकीकरण और कृषि विपणन व्यवस्था में बिचौलियों की भूमिका को सीमित कर खुली बाजार प्रणाली विकसित करके कृषि क्षेत्र से जीडीपी में होने वाले योगदान को बढ़ाने में सहायता प्राप्त हो सकती है।

पशुपालन और डेयरी विकास– भारत आज विश्व के सबसे अधिक दुग्ध उत्पादक देश में एक है साथ ही गौवंश और महिष वंश के पशुओं की संख्या की दृष्टि से भी हमारा देश विश्व में अग्रणी स्थान रखता है। बढ़ती जनसंख्या की पोषण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा डेयरी उत्पादो की घरेलू और वैश्विक बाजार की आपूर्ति के लिए भारत के डेयरी क्षेत्र में विकास की बड़ी संभावनाएं हैं। जिसके लिए पशुओं में गुणात्मक सुधार, पशु स्वास्थ्य सुविधाओं को उन्नत बनाना, डेयरी उत्पादों के लिए प्रसंस्करण क्षमता और भंडारण सुविधा को आधुनिक तकनीक के प्रयोग द्वारा बेहतर बनाने की आवश्यकता है।

वस्तु निर्माण उद्योग– वर्तमान समय में देश में विश्व की सर्वाधिक युवा श्रम शक्ति उपलब्ध है साथ ही भारत की भौगोलिक विशिष्टता भी इसे प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से इसे एक समृद्ध राष्ट्र बनती हैं। ऐसे अनुकूल परिवेश में विकसित भारत के लक्ष्य को पुरा करने और विकास के नए आयाम के लिए विनिर्माण क्षेत्र के विभिन्न स्तरों–बृहद, मध्य और लघु तथा कुटीर उद्योगों को नए उत्पादों के निर्माण के लिए प्रयास करना चाहिए, जिससे घरेलू तथा वैश्विक बाजार की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। इसके लिए व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा में टिके रहने के लिए उत्पादित वस्तुओं का किफायती, गुणवत्तापरक तथा पर्यावरण हितैषी होना विशेष आवश्यक है।

रक्षा उपकरणों का विकास– विश्व की तेजी से बदलती भू–राजनीति तथा देश की रक्षा संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए विश्वसनीय स्वदेशी उन्नत रक्षा उपकरणों का निर्माण भारत के स्वावलंबन के लिए आवश्यक है।

बदलती सामरिक तकनीक के अनुरूप ड्रोन, ए.आई. तकनीक सेटेलाइट्स, इंफ्रारेड रडार इत्यादि रक्षा उपकरणों का निजी और सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा उत्पादन एक तरफ देश की रक्षा चिंताओं से निपटने में सहायक हुआ, तो दूसरी तरफ यह देश के आर्थिक समृद्धि के लिए नये आर्थिक स्रोत के सृजन में सहायक होगा।

इलेक्ट्रॉनिक वाहन निर्माण– स्वदेशी इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या में वृद्धि जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने तथा जीवाश्म ईंधन के सीमित भंडारों को देखते हुए लोगों की यातायात जरूरत को आसान बनाने के साथ ही पर्यावरण की स्वच्छता और आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है। इसके लिए इलेक्ट्रिक वाहनों में प्रयोग होने वाली लिथियम आयरन फास्फेट बैट्री के साथ ही ठोस इलेक्ट्रोलाइट (सॉलिड स्टेट) तकनीक वाली बैटरी के प्रयोग को बढ़ावा देना होगा साथ ही हल्की और लंबी चलने वाली बैटरियों के लिए सतत अनुसंधान की आवश्यकता है। जिससे जैविक ऊर्जा की खपत को काम करके ईंधन आपूर्ति को सुचारु बनाया जा सके।

ग्रीन एनर्जी का विकास– किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए सतत ऊर्जा आपूर्ति एक महत्वपूर्ण कारक है। वर्तमान समय में ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते प्रभावों के कारण कार्बन का उत्सर्जन कम करने का दबाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। ऐसे में विकास के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा ग्रीन हाइड्रोजन फ्यूल इत्यादि की स्वदेशी तकनीक के विकास की आवश्यकता है, जिससे विकसित भारत के इंजन को पर्याप्त ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

निवेश, बचत और वित्तपोषण– निवेश को आर्थिक वृद्धि का प्रमुख चालक माना जाता है। दीर्घकालिक विकास को बनाए रखने और उत्पादन क्षमता का विस्तार करने के लिए भारत को सार्वजनिक और निजी दोनों प्रकार के निवेश में वृद्धि करनी होगी। अवसंरचना, औद्योगिक विकास, तकनीकी नवाचार और मानव पूंजी में निवेश उत्पादकता और आर्थिक विस्तार को बढ़ावा देता है।

एक मजबूत वित्तीय प्रणाली के लिए बचत का संकलन और निवेश में उनका प्रभावी उपयोग आवश्यक है। घरेलू बचत निवेश के लिए पूंजी का एक स्थिर स्रोत प्रदान करती है तथा बाहरी वित्तपोषण पर निर्भरता को कम करती है।

इस प्रक्रिया में उद्यमिता की विशेष भूमिका होती है। उद्यमी नए विचार प्रस्तुत करते हैं, नवीन उत्पाद और सेवाएँ विकसित करते हैं तथा रोजगार के अवसर उत्पन्न करते हैं। पिछले दशक में भारत ने तकनीकी नवाचार और डिजिटल प्लेटफार्मों द्वारा संचालित एक सशक्त स्टार्ट–अप पारिस्थितिकी तंत्र का उदय देखा है।

रोजगार और श्रम बाजारः भारत एक युवा देश है, इसलिए रोजगार सृजन भारत की विकास यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती है और प्रत्येक वर्ष नए लोग श्रमबल में प्रवेश करते हैं, अर्थव्यवस्था को विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त और स्थायी रोजगार के अवसर उत्पन्न करने होंगे। विनिर्माण तथा आधुनिक सेवा क्षेत्र भविष्य में रोजगार के प्रमुख स्रोत बन सकते हैं। हालांकि इस परिवर्तन के लिए श्रमिकों के पास आवश्यक कौशल होना चाहिए। इसलिए कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

डिजिटल प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा विश्लेषण और उन्नत विनिर्माण जैसे क्षेत्र नए प्रकार के रोजगार उत्पन्न करेंगे। इसके साथ–साथ महिलाओं की श्रम भागीदारी को बढ़ाना भी आवश्यक है, जिससे आर्थिक विकास अधिक समावेशी बन सके।

वित्तीय बाजार और संस्थागत सुधार– आर्थिक विकास के लिए कुशल वित्तीय बाजारों का होना आवश्यक है। ये बचतकर्ताओं से निवेशकों तक पूंजी के प्रवाह को सुगम बनाते हैं और व्यवसायों को वित्तपोषण प्राप्त करने में सहायता करते हैं। डिजिटल वित्तीय प्रौद्योगिकियों के विकास ने वित्तीय सेवाओं की पहुँच को व्यापक बनाया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा विश्लेषण का उपयोग जोखिम मूल्यांकन और निवेश निर्णयों को बेहतर बनाने में किया जा रहा है। वित्तीय समावेशन को सुदृढ़ करना भी एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। FDI नियमों में सावधानीपूर्वक बदलाव, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित करने में सहायक होंगे।

शिक्षा और कौशल विकास– मानव संसाधन का विकास विकसित भारत 2047 के प्रमुख स्तंभों में से एक है। एक सुशिक्षित और कुशल कार्यबल आर्थिक विकास को गति देता है, उत्पादकता को बढ़ाता है और नवाचार को प्रोत्साहित करता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बहुविषयक अध्ययन, अनुसंधान और नवाचार पर अधिक बल दिया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, जैव प्रौद्योगिकी और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में कौशल विकास भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

स्वास्थ्य और उत्पादकता– एक स्वस्थ जनसंख्या मानव विकास और आर्थिक उत्पादकता का आधार होती है। इसलिए स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करना आवश्यक है। अस्पतालों, चिकित्सा अनुसंधान, सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों और प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों में निवेश स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और पहुँच को बेहतर बना सकता है।

क्रियान्वयन की चुनौतियाँ और शासन तंत्र– विकसित भारत 2047 की परिकल्पना के क्रियान्वयन में राजकोषीय सीमाएँ, संस्थागत अक्षमताएँ तथा केंद्र और राज्य सरकारों के बीच समन्वय जैसी चुनौतियाँ सामने आ सकती हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए प्रभावी शासन व्यवस्था और मजबूत नीति क्रियान्वयन तंत्र आवश्यक है। सार्वजनिक–निजी भागीदारी अवसंरचना विकास को गति दे सकती है और बड़े विकास परियोजनाओं के लिए वित्तीय तथा तकनीकी संसाधनों को जुटाने में सहायता कर सकती है।

निष्कर्ष– विकसित भारत 2047 की परिकल्पना भारत को एक विकसित, समावेशी और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी राष्ट्र में परिवर्तित करने के लिए एक महत्वाकांक्षी रोडमैप प्रस्तुत करती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सतत आर्थिक वृद्धि, तकनीकी नवाचार, मजबूत संस्थाएँ और मानव संसाधन का विकास आवश्यक है। अवसंरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, उद्यमिता और कौशल विकास में निवेश भारत के भविष्य के आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। प्रभावी शासन और समावेशी विकास के प्रति प्रतिबद्धता के साथ भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की अपनी आकांक्षा को साकार कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Agarwal, K. K., Shukla, A. K., & Kumar, A. (2024). Viksit Bharat@2047: Transforming future of the nation. New Delhi Publishers.
2. Dan, I.(2024). Viksit Bharat@2047: A vision for India's sustainable development. TheScientific Temper, 15(Special Issue 2), 53–58.
3. Government of India. 92025). Vision of Viksit Bharat@2047. (https://viksitindia.com/) (https://viksitindia.com/)
4. Mohapatra, S., & Pohit, S. (2024). Charting the path to a developed India: Viksit Bharat 2047. National Council of Applied Economic Research (NCAER0.
5. NITI Aayog. (2025). Strategic imperatives for Viksit Bharat @2047. Government of India. (https://www.niti.gov.in@))(https://www.niti.gov.in@)
6. Sarkar, B., & Singh, H. (2025). Viksit Bharat @2047: A vision for India's future. In Viksit Bharat A multidisciplinary vision (pp. 558-570). HENXI Publication.
7. Yadav, S., & Singh, D. (2024). Towards Viksit Bharat: Roadmap for a developed India by 2047. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), 12(9).
8. Virmani, A. (2024, June). Viksit Bharat: Unshackling job creators and empowering growth drivers. NITI Aayog.
9. Press Information Bureau. (2025). Building a Viksit Bharat with 6G: From 4G self&reliance to 6G global leadership. Government of India.
10. NITI Aayog. (2025). Strategic imperative for Viksit Bharat @2047. Government of India.

*****